Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 6, May 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

मीडिया की भूमिका आतंकी घटनाओंके सम्बन्ध में

निखिल कुमार सिह
Associate Professor, Department of Defense and Strategic Studies

सारांश

एक प्रसिद्ध उक्त है – 'सूचना ही शक्ति हैं' यह शक्ति अमरीका, फ्रांस, ब्रिटेन, रूस की हो या फिर आतंकवादियों की आज मीडिया जिस तरह से ऑपरेट होता है उसके चरित्र को देखकर यह सहजता से कहा जा सकता है कि इसे किसी भी तरह की शक्ति संचालित कर सकती हैं यह एक ऐसा भूखा दैत्य है जिसे हर क्षण अपनी भूख के लिए खबरे और सूचनाएं चाहिएं वह जिस तरह इराक युद्ध में अमरीका के साथ हो जाता है तो अमरीका के ऊपर आतंकवादियों के हमले के समय काफी हद तक उनको भी उतनी ही उदारता से समय देता है बारीक तहों में मीडिया का अपना एक आतंकवाद हैं मीडिया को ऑपरेट करने वाले भी है और बहुराष्ट्रीय कंपनिया अपने वैश्विक हितो के लिए युद्ध और आतंकवाद को प्रायोजित करने में कोई संकोच नहीं करतीं इसके पीछे एजेंडा सेटिंग की अवधारणा काम करती हैं इस अवधारणा का तात्पर्य है कि मीडिया द्वारा मुद्दों का निर्माण किया जाता हैं वह लोगों को बताता है कि आज कौन–सा मुद्दा सबसे महत्वपूर्ण है तथा कौन से मुद्दे गौण हैं संचार विशेषज्ञों के अनुसार मीडिया कुछ मुद्दों को ज्यादा महत्व देकर शेष मुद्दों की उपेक्षा करता हैं इससे जनमत भी प्रभावित होता हैं लोगों को मीडिया से ही पता चलता है कि कौन से मुद्दे प्रमुख है तथा उनकी प्राथमिकता क्रम क्या हैं

परिचय– वैज्ञानिक शोध के म ाध्यम से एजेंडा–सेटिंग की अवधारणा प्रस्तुत करने का श्रेय मैकॉम्ब ऐंड शॉ को जाता हैं जिसके अनुसार ''लोग वास्तविक जगत की घटनाओं पर नहीं बल्कि उस मिथ्या छवि के आधार पर प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं, जो हमारे मस्तिष्क में बनायी गयी हैं मीडिया हमारे मस्तिष्क में ऐसी छवि बनाने तथा एक मिथ्या–परिवेश निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं''

यह अवधारणा 11 सितंबर की घटना के बाद अमरीकी बहुराष्ट्रीय जनमाध्यमों में 'बदला लो' की थीम पर तेजी से प्रसारित किये गये बयान से लगा तथा उन बयानों को तरजीह दी गई जो बदले की भावना से कहे गये या 'सबक सिखाने' या 'बदला लेने' पर जोर देते थें संकट की अवस्था में खासकर आतंकी हमले के संदर्भ में जनमाध्यम विस्तृत और प्रमाणित खबर और सूचनाएं नहीं देतें इसके कारण सैन्य कार्रवाई या बदला लेने की आवाज उठती हैं 11 सितंबर की घटना के बारे में यही हुआं अमरीकी प्रशासन ने समूचे बहुराष्ट्रीय मीडिया को अघोषित सेंसरशिप स्वीकार करने के लिए मजबूर कर दियां 10 अक्टूबर 2001 को एबीसी, सीबीएस, एनबीसी, फॉक्स और सीएनएन के प्रतिनिधियों के साथ अमरीकी सुरक्षा सलाहकार कोंडालिसा राइस की एक बैठक हुई जिसमें इन माध्यमों के प्रतिनिधियों ने अमरीकी आदेशों को तुरंत स्वीकार कर लियां इसमें कहा गया था कि भविष्य में लादेन का कोई भी टेप या टेप किया हुआ बयान अविकल प्रसारित नहीं किया जायेगां बल्कि संक्षिप्त दिखाया जायेगां वे अंश निकाल दिये जायें जो भड़काऊ हों एनबीसी न्यूज के मुखिया नील शपोरी ने कहा कि राइस का कहना था कि लादेन चमत्कारी वक्ता है वह अपने 20 मिनट के प्रसारण मे अपनू अनुयायियों के मन में अमरीका विरोधी भावनाएं भड़का सकता हैं अमरीकियों के खिलाफ धृणा पैदा कर सकता हैं इसके कारण उसके अनुयायी अमरीकियों की हत्या की कोशिश कर सकते हैं इस बैठक में न्यूज कारपोरेशन के मालिक रूपक मडरॉक ने कहा कि हम वह सब करेंगे जो हमारी राष्ट्रभक्ति के लिए आवश्यक हैं सीएनएन ने भी अमरीकी शर्तों को सहर्ष स्वीकार कर लियां

सी एन एन के अध्यक्ष वाल्टर इस्काशन ने अपने संवाददाताओं को आदेश दिया है कि अफगानिस्तान से रिपोर्ट भेजते समय अफगानियों की मौत या कष्टों की खबरों पर जोर न दें सीएनएन के एक निर्देश पत्र में कहा गया है कि तालिबान नियंत्रित अफगानिस्तान से हमें अच्छी रिपोर्ट मिलती है, हमे अपने प्रयास दुगुने कर देने चाहियें हम सिर्फ उनके परिप्रेक्ष्य में रखकर ही रिपोर्टिंग न करें अथवा जो देखें वहीं न लिखें, बल्कि हमें पता करना चाहिये कि तालिबान कैसे नागरिकों का मानवीय रक्षा कवच के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं तालिबान कैसे 5000 निर्दोष लोगों की हत्या के लिए जिम्मेदार हैं हमें अफगानिस्तानी नेताओं को नहीं भूलना चाहिये जिनके कारण इस देश की ऐसी दुर्दशा हुई हैं वे अभी भी देश में हैं कहने का तात्पर्य यह है कि अफगानी नागरिकों की मौत की जिम्मेदारी तालिबान पर डालों अमरीकी सेना पर नहीं यह भी मत बताओं कि अमरीका ने पाकिस्तान, सऊदी अरब और फ्रांस की मदद से तालिबान को तैयार किया थां एक अन्य निर्देशपत्र में सीएनएन ने अपने संवाददाताओं को निर्देश दिया है कि हमें यह बात दिमाग में रखनी होगी कि अमरीकी सैन्य कार्रवाई आतंकी हमले की प्रतिक्रिया में हो रही हैं इस आतंकी हमले में 5,000 लोग मारे गये हैं 11 सितंबर को जिन्होंने हमला किया तालिबान प्रशासन उन्हें आश्रय दे रहा है, प्रशंसा कर रहा हैं हमें अफगानिस्तान में नागरिकों की मौत के बारे में कम करके बताना चाहियें हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि सीएनएन का कोई प्रचार अभियान के मंच के तौर पर इस्तेमाल न कर पायें यह निर्देशपत्र इसलिए भेजा है कि यह ज्ञात रहे कि हमारी खबरों में अमरीकी समर्थन में प्रोपेगैंडा सामग्री शामिल की जायें इस पत्र में मूलतः यह कहा गया कि रिपोर्ट में अफगानी नागरिकों की मौत और कष्टों पर ज्यादा ध्यान न दें इस तरह के स्पष्ट निर्देशों के बाद यह कैसे कहा जा सकता है कि अमरीकी जनमाध्यमों में संवादाताओं को स्वतंत्र रूप से लिखने या बोलने की आजादी हैं

सच्चाई यह है कि बहुराष्ट्रीय जनमाध्यमों का अमरीकी विदेश नीति के हितों से गहरा संबंध हैं इन हितों की जनमाध्यम उपेक्षा नहीं कर सकतें साथ ही इन खबरों के स्त्रोत पर गौर करें तो पायेंगे कि अमरीकी स्त्रोतों से लिये गये साक्षात्कारों में 91 फीसदी गोरे थें 85 फीसदी मर्द थें 75 फीसदी रिपब्लिकन थें 9 फीसदी समय अकेले जॉर्ज बुश को दिया गयां जबकि मात्र 3 फीसदी समय गैर सरकारी संगठनों को दिया गयां

लेकिन 11 सिंतबर की घटनाओं के बाद मीडिया की भूमिका नाटकीय रूप से प्रकाश में आयीं संभवतः पहली बार एंग्लो–अमेरिकी मीडिया चैनलों सी.एन.एन और बी.सी.सी. की श्रेष्ठता को चुनौती दी गईं कतर स्थित अरबी स्टेशन अल जजीरा ने पश्चिमी चैनलों को उनके प्रतिष्ठानों का पिट्ठू बतायां पत्रकारिता–संबंधी विरक्ति और वास्तविकता की सीमाये, खासकर टलीविजन के संदर्भ में, बेनकाब हो गईं सी.एन.एन. सूचनाएं और गलत सूचनायें देने का सबसे शक्तिशाली मध्यम बन गया थां जब उसकी श्रेष्ठता को चुनौती दी गई तो उसने ओसामा बिन लादेन और अलकायदा द्वारा अमेरिका के खिलाफ युद्ध के जेहादी रूप के प्रसार के लिए अपना इस्तेमाल होने दिया, जिससे बुश प्रशासन नाराज हो गयां अमेरिका में एक गैर–अमेरिकी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जा सकता है– इस बात ने अफरा–तफरी फैला दीं राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार कोंडोलेजा राइस ने नेटवर्क को अल जजीरा के माध्यम से पहले से रिकार्ड किये गये टेपों को प्रसारित करने पर पुनर्विचार करने को भी कहा, जो उनके अनुसार प्रचार के टेप थें सेटेलाइट प्रसारण और हाथ के कैमरे के अविष्कार के बाद से सीधा और असंपादित प्रसारण

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 6, May 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

संभवतः प्रसारण पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती रहा हैं विडंबना यह है कि कोंडोलेजा राइस ने खुद बिन लादेन के प्रचार का जवाब देने के लिए अल जजीरा को साक्षात्कार देने का फैसला किया, जैसा ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर द्वारा पहले किया जा चुका थां

इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि पश्चिमी प्रतिष्ठान ने यदि पूरे मध्य–पूर्व या मध्य एशिया नहीं तो अफगानिस्तान में हस्तक्षेप के बाद की रणनीतियों के लिए उदार मुस्लिम मत को प्रभावित करने की आवश्यकता महसूस कीं इसके लिए उन्होंने ऐसे चैनल को चुना, जो उनके अपने चैनलों की वजाय अधिक विश्वसनीय था और अब तक अगुआ बन चुका थां जब तक प्रमुख एंग्लो–अमरिकी चैनल खुद में बड़े पैमाने पर सुधार नहीं लाते, उनकी विश्वसनीयता को ओसामा बिन लादेन द्वारा उसी प्रकार नष्ट किया जा सकता है जिस प्रकार अफगानिस्तान में तालिबान और अल–कायदा शासन को नष्ट कर दिया गयां

एक महीने युद्ध की तैयारी करने के बाद, और एक महीने अपने अनन्त मीडिया चैनलों पर आतंकवाद के खिलाफ दिन–रात लड़ाई चलाने के बाद अमेरिकी मीडिया सोच में पड़ गया है कि कहीं वह मीडिया युद्ध हार तो नहीं रहा है और कहीं बिन लादेन मीडिया में यह लड़ाई जीत तो नहीं ली है? टोनी ब्लेयर से लेकर अमेरिकी मीडिया के तमाम पंडित इस बात से परेशान है कि मीडिया की लड़ाई कहीं वह हार तो नहीं गया है ? डेविस फ्रास्ट ऐसा पूछते हैं लारी किंग अपने लाइव शो में ऐसा पूछ चुके हैं इतना मीडिया प्रसार होते हुए भी वे हार गये हैं यह मीडिया के लिए भी नया समय हैं ग्यारह सितम्बर के बाद मीडिया पर यह दबाव बढ़ा है कि वह सचमुच की अनेक–धुवीयता का मीडिया बनें लेकिन अफसोस की बात है कि अमेरिकी मीडिया और अन्य मीडिया भी इस मामले में अभी उचित सबक नहीं ले रहें

अब तक के मीडिया युद्ध में अपनी रहस्यमयता और अपनी आतंकवादी छवि के बल पर लादेन जीता है और अपने कथित खुलेपन में अमेरिका हारा हैं जिस तरह अमेरिकी गोले लादेन का लक्ष्य भेद नहीं पर रहे, उसका मीडिया भी लादेन के बनाये मीडिया युद्ध को नहीं समझ पा रहां लगातार टेलीविजन कार्यक्रम देखने से हम सामाजिक जगत की प्रकृति के संबंध में जिस प्रकार की धारणा एवं तस्वीर बनाते हैं, वह स्टीरियों टाइप तथा विकृत होती हैं साथ ही, हम वास्तविकता के बेहद संकुचित, सीमित एवं चयनित अंश को ही ग्रहण कर पाते हैं वास्तविक जगत की जो तस्वीर टेलीविजन के कार्यक्रमों, सीरियलों तथा समाचारों के जरिये हमे दिखाई जाती है उसमें मौजूद विकृतियों तथा एकांगीपन का प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर इस तरह पड़ता है कि हम वास्तविक जगत को भी टेलीविजन द्वारा दिखाये गये रूप में ही देखने लगते हैं

मीडिया के प्रभावों से संबंधित अन्य सिद्धांत जनसंचार के तत्काल प्रभाव की बात करते हैं लेकिन कल्टिवेशन थ्योरी इसके दीर्घकालीन प्रभाव की बात करती है, जिसका क्रमिक विकास होता हैं मनुष्य एक लंबी प्रक्रिया में जनसंचार के संदेशों के अनुरूप एक खास नजरिये से अपने परिवेश को देखने, समझने लगता हैं इस क्रम में मनुष्य धीरे–धीरे जनसंचार के संदेशों एवं उसमें प्रस्तुत छवि के आधार पर ही सीखता और अनी धारणायें निर्मित करता हैं परिवेश तथा सामाजिक यथार्थ की छवि का निर्माण व्यक्ति के अपने अनुभवों तथा आसपास के पर्यावरण के अनुरूप होता है, जबकि इस सिद्धांत के अनुसार इसमें जनसंचार अपनी प्रभावी भूमिका निभाते हुए मनुष्य के अनुभवों पर हावी हो जाता हैं हमें लगता है कि लादेन तमाम चैनलों पर ज्यादा होशियार संचारकर्ता साबित हो रहा हैं इस काम में अमेरिका चैनल उसके मददगार ही हैं वे जितना उसे खल साबित करते है, उतना ही वह अपनी दुनिया के लिए खुदा होता जाता हैं अमेरिका मीडिया ने शीतयुद्ध जीत लिया लेकिन इस 'गुनगुने युद्ध' को हार गया हैं इसका कारण पश्चिमी मीडिया का अभी भी शीतयुद्ध पदावली में काम करना हैं यह पदावली अब उल्टी मार कर रही हैं

अन्तर्राष्ट्रीय सामरिक बाजार की पत्रिका डिफेन्स जर्नल ने माना है कि अब अगर अमेरिका लादेन को मार भी डालता है तो वह शहीद है, पकड़ता है तो वह शहीद है और नहीं पकड़ पाता है तो भी वह शहीद बन चुका हैं उस अफगानी गांव में दो सौ से ज्यादा मारे गये नागरिकों में से बच गये एक आदमी ने सी.एन.एन. पर क्षोभ से कहा कि अब तो हममें से हरेक लादेन हैं पाकिस्तान में पचासी फीसदी लोग तालिबान और लादेन के साथ हैं लादेन ग्यारह सितम्बर के बाद ऐसा ग्लोबल मिथ है जो दुनिया के मुसलमानों सच या झूठ, एक प्रकार के तालिबानीकरण की दीक्षा–सी दे रहा हैं उसके पोस्टर बच्चों के हाथों में हैं वे उसके कथित जेहाद को अपना समझ रहे हैं

निष्कर्ष :– यह सर्वविदित है कि आज का मीडिया सूचना के अधिकार का कई बार दुरूपयोग करता हैं दुरूपयोग के अपने निहितार्थ और लाभ हैं वह जहां एक ओर किसी के पक्ष में सूचनायें दबा सकता है वही उसमें अतिरंजना का बघार लगा सकता है उसमे एक छिपी हुई हिंसा है और दबा हुआ आतंकवादं इन दोनों तत्वों का विकास हुआं चिली, ग्वाटेमाला, अफगानिस्तान, वियतनाम, ग्रेनाडा, सोमालिया, श्रीलंका और कश्मीर में हम देख चुके हैं आज किसी को भी केन्द्र में रखके मीडिया सक्रिय हो सकता है चाहे वह आतंकवादी संगठन हो या फिर आतंकवादी लादेनं मीडिया का हाइजेक कई अदृश्य कारणों से होता है जिसे जनता नहीं जानतीं शक्तिशाली राष्ट्र जहां हाइजेक में अव्वल है वहीं शक्तिशाली आंतकवादी संगठन भीं आतंकवादियों की छोटी–छोटी मुहिम भी आज अंतर्राष्ट्रीय समाचार बन जाती हैं ये समाचार एक सुदीर्घ यातना की तरह मानस पर अपनी भयावह जगह बनाते है और कोई एक समाज, एक देश यातनागृह में तब्दील हो जाते हैं क्योंकि यह स्थापित सत्य है कि संचार के माध्यमों से निरंतर संपर्क से कोई व्यक्ति, कोई समाज अपनी सक्रियता खो देता है और मनोवैज्ञानिक रूप से मीडिया के कहे को अंतिम सत्य मान लेता हैं

संचार विशेषज्ञ मर्टन और लाजर्सफल्ड ने भविश्यवाणी की थी– संचार उदासीनता को जन्म देगा और उसक प्रभावी मादक पदार्थों के सेवन से अधिक भयावह होगां इसे आज हम सत्य होता देख रहे हैं मनुश्य हिंसा और विद्वेश की खबरों को कभी धर्म, कभी जाति, कभी क्षेत्रीयता और कभी राश्ट्रीयता के नाम पर पूरा सामर्थन देता हैं ऐसा करते हुए वह यह भूल जाता है कि इसका प्रभाव स्वीकार के स्तर पर क्या रंग लायेगा? आने वाली पीढ़िया तमाम किस्म की हिसांओं को स्वीकार करेंगीं चाहे वह एक जाति के नाम पर श्रीलंका में हो या फिर पूर्वोत्तर भारत में अथवा कष्मीर में यह एक भयावह शुरूआत है जो किसी भी देश के जनजीवन को सदियों के लिए अषांति के द्वौर में जकड लेगीं इस जकड़ंबदी में समाचार एजेन्सी सिनेमा रेडियों, टी.वी., उपग्रह, इंटरनेट आदि सभी अपनी भूमिका का निर्वाह इस प्रविधि से करते है आपको पता नहीं चल पातां मीडिया का आज का चरित्र विशुद्ध पशुवाद की ओर ले जाता हैं मनुश्य की आदिम वृत्तियों को जगानेमें इसकी अहम भूमिका हैं वह सोचने की क्रिया पर अंकुश लगाता है और भोगवाद को हर क्षण जागृत करता हैं रोमांच, थ्रिल, कौंध, उत्तेजना, सेक्स, हिंसा रोमांस, क्रूरता, बलात्कार आदि को दृश्य और खबरें उसके सषक्त उपकरण हैं एक प्रक्रिया में आपको एक ऐसा पशु बनाते है जो भीतरी स्पर पर हर तरह के आतंक का समर्थक होता जाता हैं सच और झूठ का फर्क उसके लिए मिटता जाता हैं मीडिया भी अपनी कारजुगारियों में करणीय और अकरणीय का फर्क मिटा देता हैं वह आपको लाचार और हताशा अवस्था में फेंक देता हैं यह क्लेशदायक हैं उससे निपटने के लिए सच और झूठ के भेद को समझना अति आवष्यक हैं हर व्यक्ति को क्रूरता का जो पाठ पढाया जा रहा है उसे समझना होगां

अगर पिछले एक–डेढ दशक के अखबारों के समाचारों का विश्लेशण करें तो यह सत्य उजागर होगा कि आतंकवाद का एक देशी और विदेशी चेहरा मूर्त हो गया हैं आज बाबरी मस्जिद का मामला हो या भोजशाला का, ईसाई पादरी की हत्या हो या ननों के साथ बलात्कार, रथ यात्रायें हो अथवा जनजागरण यात्रायें–अप्रत्यक्ष तौर पर एक तरह के आतंकवाद को जन्म देते हैं फलस्वरूप एक समाज दूसरे का दुश्मन हो उठता हैं और दुश्मन वही करते हैं जो मीडिया या उसकी अघोशित षक्ति के खास कोण चाहते हैं मीडिया आपके सबसे दुर्बल विष्वासों पर इस ढंग से

आक्रमण करता है कि कभी आप धार्मिक, कभी जातिवादी तो कभी राष्ट्रवादी की तरह हिंसा में व्यस्त हो जाते हैं कहना न होगा कि यही सुनियोजित तैयारिया 'जेहाद' में आतंकवादियों के भीतर पढी जा सकती हैं एक खास तरीके से यह स्थापित किया जाता है कि कौम या मुस्लिम राष्ट्र के लिए यह आतंकवाद एक अपरिहार्य जरूरत हैं जनता यह कभी नहीं जान पाती कि देशी अथवा विदेशी आतंकवाद के पीछे कौन–सी षक्तियॉ हैं वे क्यों इतना पैसा इन विध्वसंक कार्यवाहियों में झोंक रही है जिनमे बम से लेकर मिसाइल तक की सप्लाई में कोई गुरेज नहीं कहा गया है कि क्रांतियां अपनी संतानों को खा जाती हैं 21 वी सदी को संचार क्रांति कहा गया हैं इसकी षक्ति अपरिमित हैं यदि इस क्रांति के गलत कदमों को नहीं रोका गया तो मुमकिन है विज्ञान की यह सुंदर देन आने वाली पीढियों के लिए एक ऐसा नरक निर्मित करें जिसमें सिर्फ मूल्यहीनता और अपसंस्कृति हों ऐसी अपसंस्कृति जिसमें आतंक और हिंसा का मानकीकरण जायज करार दे दिया जायें आतंक के रास्ते जाते मीडिया की लगाम कसना, हर नागरिक का कर्तव्य हैं

सन्दर्भ–

1. मनोहरलाल बाथम शिवचरण विश्वकर्मा : आतंक वाद चुनौती और संघर्ष 2008 : पृ0 211
2. अमरीकी पत्रकार वाल्टर लिपमैन 'पब्लिक ओपिनियन' 1922
3. जगदीश्वर चतुर्वेदी : युद्ध ग्लोबल संस्कृति और मीडिया, 2005: पृ 28
4. ए0बी0सी वर्ल्ड न्यूज टु नाई, सीबीएस इवनिंग न्यूज और एनबीसी नाइटली न्यूज, 2001
5. मेजर जनरल विनोद सहगल : अंतराष्ट्रीय आंतकवाद, 2009 पृ0 198
6. दि इंडियन एक्सप्रेसः 28 अगस्त, 2002
7. सुधीरा पचौरी : मीडिया जनतन्त्र और आंतकवाद, 2005 पृ0 195
8. जॉज गर्बनर यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सीलवेनिया, एनीनबर्ग स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन, शोध 1976
9. विष्णु राजगढ़िया : जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग, 2008, पृ0 91